अश्वगंधा की खेती कर मुनाफा कमाएँ

प्रखर खरे

उद्यान विभाग, शुआट्स इलाहाबाद

Corresponding Author - prakhar.dynamo@gmail.com

परिचय

अश्वगंधा एक औषधीय पौधा है जिसकी जड़ों में पौधे का मूल तत्व पाया जाता है। इसकी खेती उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, पंजाब एवं हरियाणा में मूलतः की जाती है। यह एक सूखा सहनीय फसल है, हालांकि बेहतर सिंचाई इसकी जड़ों की गुणवत्ता बढ़ाती है।

अश्वगंधा को आमतौर पर बलवर्धक और तनाव कम करने की दवा के रूप में जाना जाता है। यह सर्दी जुकाम जैसी बीमारियों से लड़ने के लिए भी कारगर है। कोरोना महामारी के बाद अश्वगंधा जैसी औषधिक फसलों की माँग में खासा इजाफा देखा गया है।

कैसे करें खेती

अश्वगंधा की खेती वैसे तो बहुत प्राचीन काल से की जा रही है लेकिन इसकी खेती में आये नवीनीकरणों को अपनाना बेहद आवश्यक है। भूमि तैयार करने की विधि, उर्वरक एवं ज्ञानपूर्ण उपयोग से कई गुना अधिक उपज पैदा की जा सकती है। इसकी खेती के लिये 20^0 सेल्सियस से 35^0 सेल्सियस तापमान उपयुक्त होती है और इसे 60-75 से.मीं वर्षा की जरूरत होती है। अश्वगंधा की खेती के लिये मिट्टी की गुणवत्ता सबसे अहम है। मिट्टी में कोई भी निहित कीटनाशक नहीं होना चाहिये एवं आस पास के खेतों से भी कीटनाशक के द्वारा प्रदूषण का खतरा नहीं होना चाहिए। इस संदर्भ में मिट्टी की जाँच करवाना एक आवश्यक कदम है।

भूमि की तैयारी

भूमि की कम से कम दो बार जुताई आवश्यक है । आखिरी जुताई के दौरान जैविक खाद के उपयोग से जड़ों की गुणवत्ता में वृद्धि होती है। अंत में खेत को समतल कर उठे हुए बेड बनाये जाते हैं।

बुआई की प्रक्रिया

अश्वगंधा खरीफ में देर से आने वाली फसल है। उत्तर भारत में इसकी बुआई का समय अगस्त महीने के दूसरे एवं तीसरे सप्ताह तक होता है। खैर, इसकी बुआई में तापमान 20^0 सेल्सियस से 35^0 सेल्सियस होना चाहिए और तापमान के अनुसार इसकी बुआई के समय में भारत के अलग अलग भागों परिवर्तन हो सकता है। आमतौर पर प्री मानसून गतिविधियों के पश्चात् तापमान फसल के लिए अनुकूल हो जाता है।

अश्वगंधा के बीजो की लाइन पद्धति से बुआई करने से बेहतर उपज प्राप्त होती है। अंकुरण के लिये, बुआई के बाद हल्की सिंचाई आवश्यक है। एक हेक्टेयर में 10-12 किलो बीज पर्याप्त होते हैं एवं इनको 15 से.मी. 10 से.मी. के अंतर में 1-3 से.मी. की गहराई पर लगाया जाता है।

उर्वरक एंव खाद

अश्वगंधा में जैविक खाद का उपयोग इसके बाजारी मूल्य को बढ़ाता है। अगर मिट्टी में नाइट्रोजन व फॉस्फोरस कम हो तो भूमि तैयार करते समय 15 किलो नाइट्रोजन एवं 25 किलो फॉस्फोरस प्रति हेक्टयर खाद के साथ मिलाकर उपयोग जा सकता है।

सिंचाई की प्रक्रिया

अश्वगंधा को एक बारानी फसल के तौर पर उगाया जाता है। पूर्ण वितरित मानसून में इसे सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। सिंचित परिस्थितियों में हर 10 दिन में फसल की सिंचाई की जाती है। रबी की फसलों के भूँसे को मल्च के तौर पर पंक्तियों में फैलाया जाना चाहिये। इससे मिट्टी की नमी संरक्षित होती है एवं खरपतवारों से बचाव मिलता है।

रोगों और कीटों से बचाव

अश्वगंधा की खेती में जितना अधिक हो सकें रासायनिक तत्वों को दूर रखना चाहिए। यह रासायनिक तत्व अश्वगंधा के मूल तत्व की गुणवत्ता कम करते हैं और फसल के बाजारी मूल्य को घटाते हैं। उचित सांस्कृतिक विधियों का उपयोग जैसे गेंदे जैसी जाल फसलों को खेतों के चारों तरफ लगाना, फसल रोटेशन करना एवं समयबद्ध सिंचाई से कीटों से बचाव किया

जा सकता है। कीटो के विरुद्ध जैविक कीटनाशकों का उपयोग भी किया जा सकता है। रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग तभी किया जाना चाहिए जब कोई अन्य विकल्प न हो। अश्वगंधा में बीमारियाँ कम होती हैं। कुछ जगहों पर रॉट एवं ब्लाइट बीमारियाँ देखी जाती हैं । इनका निवारण जैविक तरीके से आसानी के साथ किया जा सकता है।

कटाई एवं बिकाई की प्रक्रिया

अश्वगंधा का पौधा दिसंबर से फूल और फल देने लगता है। फसल की परिपक्वता का आकलन पत्तियों के सूखने और फल के पीले या लाल रंग होने से मापा जाता है। अश्वगंधा के पौधे को जमीन से उखाड कर जड़ों को काट लिया जाता है। जड़ों से मिट्टी को हटा उन्हें धूप में सुखा अतिरिक्त पानी सुखा लिया जाता है।

भारत सरकार देश भर में दस औषधि मंडियाँ संचालित करती है जो कि अमृतसर,जयपुर, कोलकाता, लखनऊ, मुम्बई और नीमच में स्थित हैं। इसके अतिरिक्त किसान www.echarak.in पर भी फसल के खरीदार और फसल के सही मूल्यों को देख सकते हैं।

निष्कर्ष

अश्वगंधा की खेती छोटे एवं बड़े किसान दोनों के लिए फलदायक हो सकती हे। इसके लिये समयबद्ध बुआई और रासायनिक उर्वरकों से बचाव कराना बहुत जरूरी है। सरकार देश में तेजी से औषधीय मंडियों की संख्या बढ़ा रही है। इससे अश्वगंधा की खेती को प्रोत्साहन मिलेगा।

❖❖